SEM-1, SC-102, Forded-09.06.21
BY- Dr. S.B. Choudhary Ped-2

TOPIC- शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता (EDUCATION AND SOCIAL MOBILITY)

"By social mobility is meant any transition of an individual from one position to another in a Constellation of social group and strata."

—*P. Sorokin.*

सामाजिक गतिशीलता का अर्थ तथा परिभाषा (Meaning and Definition of Social Mobility)

सामाजिक गतिशीलता का अर्थ (Meaning of Social Mobility)—गतिशीलता का तात्पर्य है व्यक्ति की किसी सामाजिक ढाँचे में गति (Movement)। इस दृष्टि से सामाजिक गतिशीलता का अर्थ किसी व्यक्ति अथवा समूह के सामाजिक पद (Social Status) में होने वाला परिवर्तन है। चूँकि सामाजिक ढाँचे में पद अथवा स्थान (Position) ऊँचे-नीचे होते रहते हैं, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति अपनी निजी इच्छा तथा योग्यता के आधार पर इन्हीं सामाजिक पदों में से किसी भी ऊँचे अथवा नीचे पद को प्राप्त करके अपनी सामाजिक स्थिति को ऊँचा अथवा नीचा कर सकता है। सामाजिक स्थिति को ऊँचा-नीचा अथवा इसमें किसी भी प्रकार का तनिक भी परिवर्तन होना सामाजिक गतिशीलता कहलाती है। दूसरे शब्दों में, एक सामाजिक स्थिति से दूसरी सामाजिक स्थिति प्राप्त करना ही सामाजिक गतिशीलता है। ध्यान देने की बात है कि सामाजिक गतिशीलता तथा भौतिक गतिशीलता में महान् अन्तर है। सामाजिक गतिशीलता व्यक्ति के सामाजिक पद परिवर्तन की ओर संकेत करती है, जबकि भौतिक गतिशीलता व्यक्ति अथवा समूह का एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानान्तर (Migration) है। इस दृष्टि से घर से कॉलिज अथवा सहारनपुर से अनूपशहर जाना भौतिक गतिशीलता है तथा छोटे बाबू से बड़ा बाबू बन जाना सामाजिक गतिशीलता के उपयुक्त उदाहरण हैं।

सामाजिक गतिशीलता की परिभाषा (Definition of Social Mobility)

सामाजिक गतिशीलता के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए हम निम्नलिखित परिभाषा दे रहे हैं—

पी० सोरोकिन—"सामाजिक गतिशीलता का अर्थ, सामाजिक समूहों तथा स्तरों में किसी व्यक्ति का एक सामाजिक स्थिति से दूसरी सामाजिक स्थिति में पहुँच जाना है।"[1]

सामाजिक गतिशीलता के रूप (Forms of Social Mobility)

सोरोकिन के अनुसार सामाजिक गतिशीलता के निम्नलिखित दो रूप होते हैं—

(1) समतल (Horizontal) सामाजिक गतिशीलता।

1. "By social mobility is meant any transition of an individual from one social position to another in Constellation of ...

SEM-1, SC-102, Dated-09.06.2021

(2) उदग्र (Vertical) सामाजिक गतिशीलता।

समतल सामाजिक गतिशीलता (Horizontal Social Mobility) – समाज के कुछ समूहों की स्थिति समान होती है और कुछ की ऊँची-नीची। जब व्यक्ति का परिवर्तन समान स्थिति वाले समूहों अथवा वर्गों में होता है तो इसे समतल सामाजिक गतिशीलता की संज्ञा दी जाती है। स्मरण रहे कि समतल सामाजिक गतिशीलता में व्यक्ति का पद (Position) तो अवश्य बदल जाता है, परन्तु उसका वेतन, प्रतिष्ठा तथा अन्य सुविधायें नहीं बदलतीं। दूसरे शब्दों में, उसकी वर्ग-स्थिति ज्यों की त्यों ही बनी रहती है। उदाहरण के लिए, एक जिलाधीश का सचिवालय के किसी भी समान वेतन तथा प्रतिष्ठा वाले पद पर तबादला होने से उसकी वर्ग-स्थिति में कोई अन्तर नहीं पड़ता।

सोरोकिन ने समतल सामाजिक गतिशीलता के निम्न रूपों की चर्चा की है—

(i) **प्रजाति समूहों, लिंग समूहों तथा आयु समूहों में गतिशीलता** (Intergroup Mobility in Race, Sex and Age Groups) – प्रायः प्रजाति समूहों, लिंग समूहों तथा आयु समूहों में परिवर्तन नहीं होता। इसका एक मात्र कारण यह है कि अपनी इच्छा से न तो कोई नीग्रो श्वेत हो सकता है और न कोई पुरुष स्त्री बन सकता है। ऐसे ही बालक भी प्रौढ़ नहीं बनना चाहता। पर जब उक्त समूहों का विकास सामाजिक वर्गों के रूप में होता है तो इनमें समतल गतिशीलता का होना सम्भव है। दूसरे शब्दों में, जब समान स्थिति वाले आयु अथवा लिंग समूहों में आना-जाना आरम्भ हो जाता है तो समतल गतिशीलता अनुभव होने लगती है।

(ii) **व्यावसायिक गतिशीलता** (Occupational Mobility) – एक व्यवसाय से दूसरे समान स्थिति वाले व्यवसाय में प्रवेश करना व्यावसायिक गतिशीलता है। बन्द समाजों (Closed Societies) में जाति व्यवस्था के कड़े बन्धनों से व्यावसायिक गतिशीलता कम हो जाती है। इसके विपरीत मुक्त संस्तरण (Open stratification) व्यवस्था तथा संकट एवं आर्थिक प्रगति के समय में व्यावसायिक गतिशीलता की दर बहुत अधिक बढ़ जाती है।

(iii) **धार्मिक गतिशीलता** (Interreligious Mobility) – किसी अमुक धार्मिक विश्वास की अपेक्षा दूसरे धर्म में विश्वास करने लगना अथवा किसी अमुक धार्मिक संगठन को छोड़कर दूसरे धार्मिक संगठन में प्रवेश कर लेना धार्मिक गतिशीलता है। इस प्रकार की गतिशीलता प्रायः गाँवों की अपेक्षा नगरों में, अशिक्षित लोगों की अपेक्षा शिक्षित लोगों में तथा स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों में अधिक पाई जाती है। धार्मिक गतिशीलता बल प्रयोग द्वारा भी बढ़ जाती है। उदाहरण के लिए, मुसलमानी शासन में न जाने कितने हिन्दू लोग मुसलमान बन गये। कभी-कभी स्वेच्छा अथवा स्वार्थ के कारण भी धार्मिक गतिशीलता की दर में आश्चर्यजनक वृद्धि हो जाती है। लाखों हिन्दुओं का अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए ईसाई धर्म को स्वीकार कर लेना इस सम्बन्ध में ज्वलन्त उदाहरण है।

(iv) **दलगत गतिशीलता** (Party Mobility) – किसी राजनैतिक दल से दूसरे राजनैतिक दल में प्रवेश करना दलगत गतिशीलता कहलाती है। इस प्रकार की गतिशीलता राजनीतिक अस्थिरता, अन्य दलों के सिद्धान्तों में विश्वास तथा स्वार्थपूर्ति एवं व्यक्तिगत कारणों से होती है। हमारे देश में दलगत गतिशीलता बहुत अधिक पाई जाती है।